Interactive Rajasthan History

राजस्थान की कला, संस्कृति, साहित्य और विरासत,
एक यात्रा की तरह:
गढ़ और दरबार से बाजार, चौपाल, थान और मेले तक

खंड 2 · कला और संस्कृति · 134 दोहरे पन्ने



मुकेश के. शर्मा
शिवाली शर्मा

किताब के भीतर से पांच विषय

यह **खंड 2: कला और संस्कृति** का नमूना है। पूरी किताब में 8 पड़ाव और 134 दोहरे पन्ने हैं, हर दोहरे पन्ने पर एक विषय। यहां उनमें से पांच विषय हैं, वैसे ही जैसे वे किताब में छपे हैं। पहले अगले दो पन्नों पर पूरी सूची देख लीजिए, फिर पन्ने पलटिए।

1 मेहरानगढ़ की प्राचीर से

प्रस्तावना · जोधपुर · किताब के पन्ने 10-11

किले की दीवार से दिखता पूरा शहर, चार दूरियों में बंटा: हर चीज पर उस पड़ाव का नंबर, जहां किताब उसे खोलती है।

2 नीचे उतरती सीढ़ियां

पड़ाव 1 · बावड़ी · किताब के पन्ने 52-53

चांद बावड़ी को बीच से काटकर देखिए: साल भर पानी कैसे उतरता है, और किन रानियों ने कौन-सी बावड़ी बनवाई।

3 चार घराने, सत्रह शाखाएं

पड़ाव 2 · चित्रकला · किताब के पन्ने 56-57

राजस्थानी चित्रकला का पूरा परिवार एक पेड़ पर: मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती और ढूंढाड़, और उनकी सत्रह शाखाएं नक्शे पर।

4 जजमान और गायक

पड़ाव 4 · मांगणियार और लंगा · किताब के पन्ने 144-145

गाने वाले परिवार और उनके जजमान: किसने किसे क्या दिया, कौन-से वाद्य बजे, और यह रिश्ता आज कहां पहुंचा।

5 पांच पीर

पड़ाव 6 · लोकदेवता · किताब के पन्ने 184-185

रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, हड़बूजी और मेहाजी: पांचों के थान नक्शे पर, और यह कि हिंदू-मुसलमान दोनों उन्हें क्यों पूजते हैं।

हर दोहरे पन्ने पर

बायां पन्ना देखने का है: एक बड़ा नक्शा, समय-रेखा या रेखाचित्र, और उसके लोग।

दायां पन्ना समझने का है: क्या हुआ, कैसे पता है, और इसका मतलब क्या है।

स्रोत कहते हैं और परंपरा कहती है: जहां दोनों अलग बात कहें, किताब दोनों रखती है।

खुद देखिए: हर पन्ने के आखिर में कुछ ऐसा, जो आप अपने शहर या गांव में जाकर देख सकते हैं।

सूची

प्रस्तावना — मेहरानगढ़ की प्राचीर से

00-01 मेहरानगढ़ की प्राचीर से 10

पड़ाव 1 · पत्थर में लिखा — किले, महल, मंदिर, बावड़ियां

01-01 किले नौ तरह के 12
01-02 छह किले, एक सूची 14
01-03 सात दरवाजे पार 16
01-04 पहाड़ों पर दौड़ती दीवार 18
01-05 तीन ओर पानी 20
01-06 किला, जिसमें लोग रहते हैं 22
01-07 दिखता नहीं, इसलिए बचा 24
01-08 एक पहाड़ी, तीन किले 26
01-09 तोपों के नाम 28
01-10 सूची से बाहर के किले 30
01-11 नीचे से शिखर तक 32
01-12 तीन शैलियां 34
01-13 1,300 साल के मंदिर 36
01-14 दीवार पर दुनिया 38
01-15 1,444 खंभे 40
01-16 घी वाला मंदिर? 42
01-17 पांच मंजिल, सैकड़ों झरोखे 44
01-18 महल जो सदियों में बना 46
01-19 अकाल में बना महल 48
01-20 खंभे गिनिए 50
01-21 नीचे उतरती सीढ़ियां 52
01-22 एक बारिश, एक फसल 54

पड़ाव 2 · दरबार के रंग — चित्रकला की शैलियां व उस्ता कला

02-01 चार घराने, सत्रह शाखाएं 56
02-02 पत्थर से रंग तक 58
02-03 जंगल में दरबार 60
02-04 पोथी जो चित्र बनी 62
02-05 बदलता परदा 64
02-06 ठिकाने के चित्र 66
02-07 घोड़े और नाथ 68
02-08 उस्ताओं की कलम 70
02-09 बणी-ठणी का चेहरा 72
02-10 रेत के किनारे 74
02-11 बारह महीने, बारह चित्र 76
02-12 शिकार के पीछे 78
02-13 सूरतखाना 80
02-14 खुली गैलरी 82
02-15 दो दरबारों के बीच 84
02-16 गीली दीवार पर रंग 86
02-17 कपड़े पर एक राज्य 88
02-18 कौन-सा घराना? 90

पड़ाव 3 · बाजार और कारीगर — हस्तशिल्प, छपाई और मीनाकारी

03-01 किस शहर में क्या बनता है 92
03-02 मिट्टी के देवता 94
03-03 नीला, जिसमें मिट्टी नहीं 96
03-04 कांच पर सोना 98
03-05 सोने पर रंग 100
03-06 सांगानेर या बगरू? 102
03-07 मिट्टी से रोका रंग 104
03-08 गांठ में रंग 106
03-09 कैथून का खाना 108
03-10 खुलता मंदिर 110
03-11 ऊंट की खाल पर सोना 112
03-12 ऊन का नक्शा 114
03-13 आंगन का कैलेंडर 116
03-14 नाम जो कानून बना 118

पड़ाव 4 · चौपाल पर — लोकनृत्य, लोकनाट्य और वाद्ययंत्र

04-01 घूमता घेरा 120
04-02 जनजातियों के नाच 122
04-03 चालीस दिन का नाटक 124
04-04 सांप जैसी लचक 126
04-05 आग, घड़े और ताल 128
04-06 ढोल बजा, गैर चली 130
04-07 जयपुर घराना 132
04-08 रात भर का खयाल 134
04-09 रम्मत, तमाशा, चारबेत 136
04-10 एक आदमी, सौ रूप 138
04-11 धागों पर राजा 140
04-12 केसरिया बालम 142
04-13 जजमान और गायक 144

04-14 तार वाले बाजे 146
04-15 फूंक के बाजे 148
04-16 चार परिवार 150
04-17 गीतों का साल 152
04-18 जिन्होंने लोक कला बचाई 154

पड़ाव 5 · बोली-बानी भाषा, बोलियां और साहित्य

05-01 एक भाषा, कई बोलियां 156
05-02 मरुभाषा से राजस्थानी 158
05-03 डिंगल और पिंगल 160
05-04 कहने के ढंग 162
05-05 चारण की कलम 164
05-06 पीथल और पाथल 166
05-07 गांव का हिसाब 168
05-08 वंश भास्कर 170
05-09 धोरों की धरती 172
05-10 बातों की फुलवाड़ी 174
05-11 एक आदमी, एक शब्दकोश 176
05-12 नई कलमें 178
05-13 मान्यता की लड़ाई 180
05-14 एक बात, पांच बोलियां 182

पड़ाव 6 · थान और देवरे लोकदेवता, लोकदेवियां और पंचपीर

06-01 पांच पीर 184
06-02 रामसा पीर 186
06-03 पाबूजी की रात 188
06-04 दो नाम, एक वीर 190
06-05 पीरों की कतार 192
06-06 सांप और वचन 194
06-07 देवनारायण की गाथा 196
06-08 हर इलाके का देवता 198
06-09 थान की बनावट 200
06-10 देशनोक की देवी 202
06-11 पहाड़ों की देवियां 204
06-12 रेत की देवियां 206
06-13 ठंडा खाना 208
06-14 कुल की देवी 210
06-15 किस काम का देवता 212
06-16 आदमी से देवता तक 214

पड़ाव 7 · संतों की राह भक्ति आंदोलन, पंथ और दरगाह

07-01 संतों का नक्शा 216
07-02 29 नियम 218
07-03 राजस्थान के कबीर 220
07-04 दो पंथ, एक इलाका 222
07-05 चार शाखाएं 224
07-06 राहों की कतार 226
07-07 बेणेश्वर का टापू 228
07-08 मीरा: दो तस्वीरें 230
07-09 एक पद, तीन बोलियां 232
07-10 दिन के आठ दर्शन 234
07-11 और भी पीठें 236
07-12 दरगाह के भीतर 238
07-13 सुधार की राह 240

पड़ाव 8 · मेला, त्योहार, पहनावा रीति-रिवाज, आभूषण और वेशभूषा

08-01 तीज से गणगौर तक 242
08-02 ईसर और गौर 244
08-03 दो तीजें 246
08-04 पशु मेले 248
08-05 आस्था के मेले 250
08-06 जन्म से अंत तक 252
08-07 ब्याह की रस्में 254
08-08 मौत और मौसर 256
08-09 जिन पर रोक लगी 258
08-10 पगड़ी बोलती है 260
08-11 अंगरखा से धोती तक 262
08-12 ओढ़नी के रंग 264
08-13 जनजातियों का पहनावा 266
08-14 सिर से पैर तक 268
08-15 गहनों की बोली 270
08-16 एक गांव, एक साल 272
08-17 मेला और फेस्टिवल 274

उपसंहार पुष्कर का मेला

09-01 पुष्कर का मेला 276

खंड 2 · प्रस्तावना · मेहरानगढ़, जोधपुर

मेहरानगढ़ की प्राचीर से

पहले खंड में हम चित्तौड़ की एक सुबह से चले थे और 1 नवंबर 1956 पर रुके। राजाओं का राज खत्म हो गया, पर राजाओं और लोगों के बनाए किले, चित्र, गीत, कपड़े और मेले बचे रहे। यह खंड उन्हीं की सैर है। सैर जोधपुर के किले की दीवार से शुरू होती है, क्योंकि इस एक शहर में आठों पड़ाव मिल जाते हैं।

मेहरानगढ़ की प्राचीर · चिड़ियाटूंक पहाड़ी · 1459



किले के भीतर

1 **गढ़ · पांच तोपें**
किल्किला, शंभूबाण, गजनी खां, कड़क बिजली और गुब्बार

2 **दरबार · रंगे हुए महल**
भीतर के कमरों की दीवारों पर चित्र

6 **थान · चामुंडा माता**
राठौड़ों की आराध्य देवी; मंदिर राव जोधा का

तलहटी में

1 **गढ़ · जसवंत थड़ा, 1899**
सफेद संगमरमर की छतरी, जसवंत सिंह द्वितीय की याद

3 **बाजार · बंधेज, मोठड़ा**
रंगाई, मोजड़ी जूतियां, जस्ते की बोतल: बादला

5 **बोली · मारवाड़ी**
गलियों और घरों की बोली, पश्चिमी राजस्थान भर में

शहर में

8 **मेला · धींगा गवर**
वैशाख की तीज का मेला; औरतें बेंत लेकर निकलती हैं

7 **संत · महामंदिर, 1805**
नाथ पंथ की गद्दी, 84 खंभों वाला मंदिर

1 **गढ़ · उम्मेद भवन**
छीतर पत्थर, 1928 से 1943; अकाल के बरसों का काम

जिले में, शहर से दूर

4 **चौपाल · बोरुंदा गांव**
रूपायन संस्थान, 1960: गीत और कथाएं रिकॉर्ड हुईं

4 **चौपाल · लांगा गायक**
बाड़मेर और जोधपुर के गांव; सारंगी और सुरनाई

रेखाचित्र: पैमाने पर नहीं · घेरे का अंक = इस खंड का पड़ाव

लाल बिंदु पर आप खड़े हैं। जितना नीचे पढ़ेंगे, उतना किले से दूर जाएंगे: पहले किले के भीतर, फिर तलहटी, फिर शहर, फिर जिले के गांव। घेरे में लिखा अंक बताता है कि वह चीज इस खंड के किस पड़ाव में आएगी।

यह खंड कैसे चलता है

पहला खंड समय के साथ चला था, इसलिए हर बाएं पन्ने के ऊपर साल की पट्टी थी। यह खंड एक रास्ते पर चलता है: किले से दरबार, फिर बाजार, चौपाल, बोली, गांव का थान, संतों की राह और आखिर में मेला। इसलिए अब ऊपर की पट्टी में आठ पड़ाव हैं, और जिस पड़ाव में आप होंगे, उसका नाम गहरा छपा होगा। राजा, लड़ाइयां और तारीखें पहले खंड में आ चुकी हैं; यहां उन्हें दोहराया नहीं जाएगा। जहां कोई पुराना नाम लौटेगा, एक पंक्ति में याद दिला दी जाएगी।

SAMPLE · litgram.in

आठ पड़ाव, एक शहर से शुरू

1 **गढ़: पत्थर में लिखा**
किले, मंदिर, महल, छतरियां और बावड़ियां। मेहरानगढ़ की कहानी पहले खंड में है। यहां देखेंगे कि किले और मंदिर बने कैसे, और पत्थर ने पानी कैसे बचाया।

2 **दरबार के रंग**
चार घरानों की चित्रकला, कागज से हवेली की दीवार और फड़ के कपड़े तक। जोधपुर की शैली में घोड़े और नाथ जोगियों के चित्र खूब बने।

3 **बाजार और कारीगर**
मिट्टी, कांच, धातु, कपड़ा, लकड़ी और चमड़ा। जोधपुर में आज भी बंधेज रंगा जाता है, मोजड़ियां सिलती हैं, और जस्ते की बोतल बादला कहलाती है।

4 **चौपाल पर**
नाच, लोकनाट्य, कठपुतली, गायकी और बाजे। 1960 में बोरुंदा में कोमल कोठारी और विजयदान देथा ने रूपायन संस्थान शुरू किया, जिसने गांव के गायकों को बड़े मंच तक पहुंचाया।

5 **बोली-बानी**
राजस्थानी की बोलियां, डिंगल और पिंगल, ख्यात से आज की कहानी तक। जोधपुर, पाली, नागौर, बाड़मेर और जैसलमेर में मारवाड़ी बोली जाती है।

6 **थान और देवरे**
पाबूजी, रामदेवजी, तेजाजी जैसे लोकदेवता और देवियां। किले के भीतर चामुंडा माता का मंदिर है; जोधपुर के राठौड़ उन्हें आराध्य और नागणेची माता को कुलदेवी मानते आए हैं।

7 **संतों की राह**
जाम्भोजी, दादू, मीरा और दूसरे संत, और उनकी पीठें। जोधपुर में महाराजा मानसिंह ने 1805 में अपने गुरु आयस देवनाथ के लिए महामंदिर बनवाया।

8 **मेला, त्योहार, पहनावा**
साल भर के त्योहार, ब्याह के रिवाज, पगड़ी और गहने। जोधपुर में धींगा गवर वैशाख की तीज को भरता है, और जोधपुरी साफा दूर से पहचाना जाता है।

जोधपुर ही क्यों?

पहला खंड चित्तौड़ से खुला था, जो मेवाड़ की कहानी का केंद्र रहा। दूसरा खंड मारवाड़ से खुलता है, ताकि शुरू में ही दिख जाए कि यह कला किसी एक रियासत की नहीं थी। जोधपुर इसके लिए ठीक बैठता है: किला, महल, बाजार, मंदिर, और लोकसंगीत के गांव, सब एक ही जिले में मिल जाते हैं। आगे हम हाड़ौती, ढूंढाड़, शेखावाटी, वागड़ और थार तक जाएंगे।

परंपरा कहती है मेहरानगढ़ की नींव करणी माता ने रखी थी। **स्रोत कहते हैं** किला 1459 में राव जोधा ने चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर बनवाया। इस खंड में ऐसी दोनों बातें बार-बार साथ आएंगी। लोकदेवताओं, मीरा और कई मंदिरों की कहानियों में परंपरा और रिकॉर्ड अक्सर अलग राह चलते हैं। हम दोनों बताएंगे, और साफ लिखेंगे कि कौन सी बात कहां से आई।

छह धागे: पूरे खंड में छह बातें लौटती रहेंगी: पहले खंड से जुड़ाव; अरावली और पानी; स्रोत और परंपरा; किसका पैसा लगा, राजा का, मंदिर का, सेठ का या गांव का; कारीगर के हाथ, यानी बनाने वालों के नाम और समुदाय; और साझी विरासत, जो धर्म और जात की हदें पार कर गई।

आगे → शुरुआत उसी से, जिस पर हम खड़े हैं: किला।

खुद देखिए अपने शहर या गांव की सबसे ऊंची जगह पर जाइए: छत, टीला, किला या मंदिर। नीचे देखिए और आठ पड़ावों में से जितने दिखें, लिख लीजिए: कोई पुरानी इमारत, रंगरेज की दुकान, गांव का थान, कोई मेला मैदान।

SAMPLE · litgram.in

पड़ाव 1 · पत्थर में लिखा · बावड़ी

नीचे उतरती सीढ़ियां

अरावली के इस पार पानी जमीन के नीचे रहता है, और गर्मी आते-आते और नीचे चला जाता है। बावड़ी उसके पीछे-पीछे उतरने का रास्ता है: ऐसा कुआं, जिसमें रस्सी और बाल्टी के बिना, सीढ़ियों से चलकर पानी तक पहुंचा जा सके। आभानेरी की चांद बावड़ी को बीच से काटकर देखिए।

चांद बावड़ी, आभानेरी (दौसा) · बीच से कटा हुआ



रेखाचित्र: पैमाने पर नहीं; पानी के तीनों स्तर समझाने भर के लिए हैं, नापे हुए नहीं।

लाल रेखा वह है, जिसके लिए बावड़ी बनी: गर्मी के अंत का पानी। कुएं में उतना नीचे रस्सी डालनी पड़ती; बावड़ी में लोग खुद उतर जाते थे। जितना पानी घटता, उतनी सीढ़ियां और काम आतीं।

किसने बनवाई?

स्रोत इसे 8वीं-9वीं सदी के राजा चांद की बनवाई बताते हैं। राजा चांद किस कुल के थे, इस पर किताबें एक राय नहीं: कोई उन्हें प्रतिहार लिखता है, कोई निकुंभ। बावड़ी के ठीक सामने हर्षत माता का मंदिर है, जिसकी बनावट इसी पड़ाव में पहले देख चुके हैं। मंदिर और बावड़ी पास-पास हों तो पूजा से पहले नहाना और पानी भरना, दोनों एक ही जगह हो जाते थे।

कुआं, टांका, बावड़ी

कुएं में पानी रस्सी और बाल्टी से ऊपर आता है। टांके में छत या आंगन से बहकर आया बारिश का पानी जमा होता है। बावड़ी में आदमी खुद नीचे उतरकर जमीन के नीचे के पानी तक जाता है। इसीलिए बावड़ी इतनी गहरी बनती थी: उसे गर्मी में पानी की सबसे नीची हद तक पहुंचना होता था।

SAMPLE · litgram.in

बावड़ी बनवाने वाली रानियां

चांद बावड़ी एक राजा की है। पर राजस्थान की जिन बावड़ियों के बनवाने वालों के नाम दर्ज हैं, उनमें कई नाम रानियों के हैं। चार बड़ी बावड़ियों को समय की एक रेखा पर रखिए।

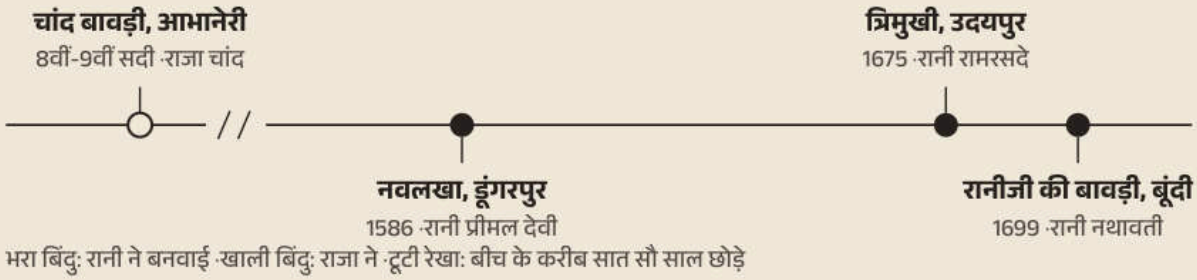

नवलखा, डूंगरपुर

1586 में डूंगरपुर के महारावल आसकरण की रानी प्रीमल देवी ने बनवाई। इसके शिल्पी का नाम भी बचा है: लीलाधर। पत्थर के कामों में बनवाने वाले का नाम तो अक्सर मिलता है, बनाने वाले का बहुत कम।

त्रिमुखी, उदयपुर

1675 में महाराणा राजसिंह की रानी रामरसदे ने बनवाई। ये वही राजसिंह हैं, जिनकी औरंगजेब से टक्कर पहले खंड में देखी थी। नाम ही बताता है कि इसमें तीन ओर से उतरा जाता है।

रानीजी की बावड़ी, बूंदी

1699 में राव राजा अनिरुद्ध सिंह की विधवा रानी नथावती ने बनवाई। नक्काशी वाले तोरण, खंभे और मूर्तियां इसे राजस्थान की सबसे सजी बावड़ियों में रखते हैं। बूंदी में इतनी बावड़ियां हैं कि उसे बावड़ियों का शहर कहा जाता है।

पहाड़ से रेत तक

आबू में अधर देवी के मंदिर के नीचे दूध बावड़ी है, जिसका पानी दूधिया दिखता है। थार में बायतु का बाटाडू का कुआं संगमरमर का है; रावल गुलाबसिंह का बनवाया यह कुआं रेगिस्तान का जलमहल कहलाता है।

पहले खंड की पहली कड़ी में टांका और कुई देखे थे, जो एक घर या एक ढाणी का पानी बचाते थे। बावड़ी पूरे गांव या शहर की थी: पीने का पानी, नहाना-धोना, आने-जाने वालों का पड़ाव, और गर्मी की दोपहर में ठंडी छांव, सब एक ही जगह।

बावड़ी के शब्द

बावड़ी शब्द संस्कृत के *वापी* से आया है। नीचे पानी वाला हिस्सा **कुंड** कहलाता है। ऊपर का सजा हुआ द्वार **तोरण** है, जैसे बूंदी की रानीजी की बावड़ी में। दीवारों में बने **आले** (ताक) दीया या मूर्ति रखने के काम आते थे। और हर सीढ़ी-चौक को **मंजिल** कहते हैं: चांद बावड़ी में ऐसी 13 मंजिलें हैं। अगली बार किसी बावड़ी में जाएं, तो ये पांचों चीजें ढूंढिए।

आगे → बावड़ी शहर की थी। रेत में खेत को पानी देने का तरीका पालीवालों ने निकाला।

खुद देखिए अपने इलाके की किसी बावड़ी या पुराने कुएं पर जाइए। सीढ़ियां गिनिए, और देखिए कि आज पानी कौन सी मंजिल तक है। पास के किसी बुजुर्ग से पूछिए कि उनके बचपन में पानी कहां तक आता था।

SAMPLE · litgram.in

पड़ाव 2 · दरबार के रंग · चित्रकला के घराने

चार घराने, सत्रह शाखाएं

पत्थर के बाद अब रंग। राजस्थान के महलों में सैकड़ों साल तक चित्र बने, और जानकार उन्हें चार बड़े घरानों में बांटते हैं: मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती और ढूंढाड़। हर घराने की अपनी शाखाएं हैं, जो किसी शहर या दरबार के नाम से जानी जाती हैं। पूरा परिवार एक पेड़ पर देखिए।

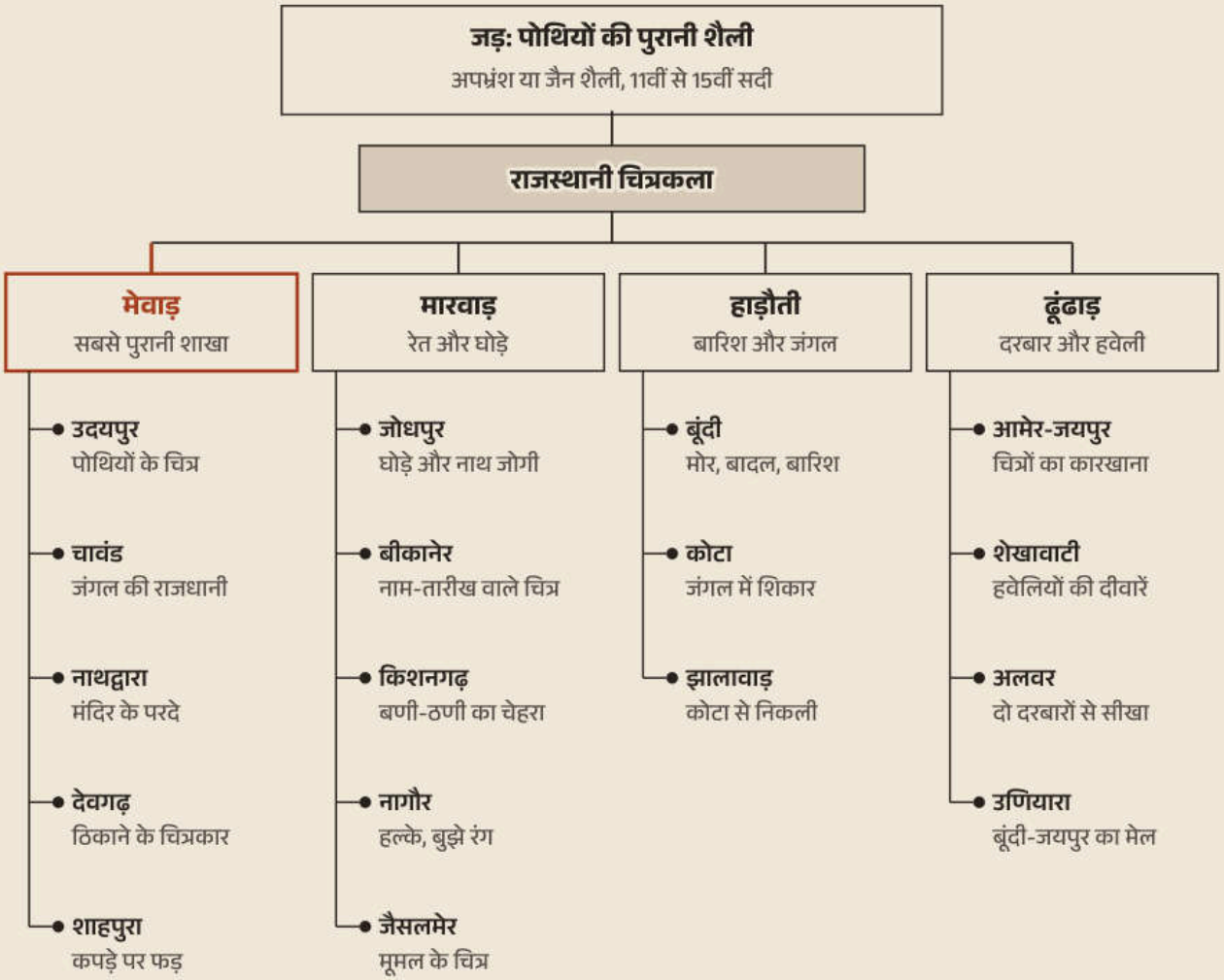

हर शाखा के नीचे उसकी एक पहचान लिखी है, बस एक इशारा। यह पड़ाव इसी पेड़ पर बाईं से दाईं ओर चलेगा: पहले मेवाड़, फिर मारवाड़, हाड़ौती और ढूंढाड़। मेवाड़ लाल रंग में है, क्योंकि जानकार उसे सबसे पुरानी शाखा मानते हैं, जिसमें जैन पोथियों की छाप सबसे साफ दिखती है। शाखाओं की गिनती हर किताब में एक-सी नहीं है: कोई सिरोही, अजमेर या करौली को भी अलग गिनता है, कोई देवगढ़ को मेवाड़ में ही मिला देता है। यहां वे सत्रह हैं, जो ज्यादातर किताबों में मिलती हैं। गिनती से ज्यादा काम की बात यह है कि हर शाखा के पीछे एक दरबार और कुछ चित्रकार परिवार थे।

SAMPLE · litgram.in

घराना कहां, कलम किसकी



घराना यानी इलाका

चारों घरानों के नाम पुराने इलाकों के नाम हैं, जो पहले खंड में बार-बार आए। नक्शे पर रंगा हिस्सा उन्हीं इलाकों का है, और काले बिंदु सत्रह शाखाओं के शहर हैं। चित्रकला में घराने को शैली या स्कूल भी कहते हैं, और किसी दरबार के खास ढंग को उसकी कलम।

पेड़, नक्शा नहीं

शाखाएं सिर्फ जगह से नहीं बनीं। राजघरानों में शादियां होती थीं, और चित्रकार एक दरबार से दूसरे दरबार जाते थे। इसलिए एक शाखा में दूसरी की छाप मिलती है, और एक ही चित्र पर दो घरानों के लोग दावा कर सकते हैं।

जड़ कितनी पुरानी?

सबसे पुराना मिला चित्रों वाला ग्रंथ 1261 का है: श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि। उसे महाराणा तेजसिंह के समय आहड़ में कमलचंद्र ने ताड़ के पत्तों पर चित्रित किया। 1423 में महाराणा मोकल के समय देलवाड़ा में हीरानंद ने सुपासनाह चरियम के चित्र बनाए। ये जैन पोथियां थीं: छोटे चित्र, लाल जमीन, एक ओर मुड़े चेहरे और बड़ी आंखें।

मुगल दरबार से लेन-देन

16वीं सदी में राजपूत राजा मुगल दरबार में जाने लगे। वहां की बारीकी, चेहरे की सच्चाई और दरबार के दृश्य राजस्थान के चित्रों में आए। पर चित्रों के विषय यहीं के रहे: कृष्ण, राग, बारहमासा, शिकार और राजा का दरबार। रंग भी यहीं के रहे: तेज लाल, पीला और हरा, जो मुगल चित्रों के हल्के रंगों से अलग दिखते हैं।

ये नाम किसने दिए?

1916 में आनंद कुमारस्वामी ने अपनी किताब राजपूत पेंटिंग में इन चित्रों को पहली बार ढंग से बांटा। उन्होंने पहाड़ के कांगड़ा जैसे दरबारों को भी साथ गिना और सबको राजपूत कला कहा। बाद में रायकृष्ण दास ने राजस्थान के चित्रों के लिए राजस्थानी शैली नाम चलाया।

चित्रों का पैसा

इस पेड़ की ज्यादातर डालें दरबार की हैं: राजा चित्रकार रखता था, और चित्र उसकी पोथी, दीवार या दरबार के लिए बनते थे। दो शाखाएं अलग हैं: शाहपुरा की फड़, जो गांव-गांव घूमती थी, और शेखावाटी, जहां सेठों ने अपनी हवेलियां रंगवाईं। यानी पत्थर की तरह रंग में भी पैसा धीरे-धीरे दरबार से बाहर निकला।

आगे → पर एक चित्र बनता कैसे था? पत्थर से रंग तक।

खुद देखिए किसी संग्रहालय, किताब या इंटरनेट पर कोई राजस्थानी चित्र देखिए और उसके साथ लिखे नाम में शहर ढूंढिए: बूंदी, किशनगढ़, मेवाड़? फिर इस पेड़ पर उसकी डाल खोजिए।

SAMPLE · litgram.in

पड़ाव 4 · चौपाल पर · मांगणियार और लांगा

जजमान और गायक

पश्चिमी राजस्थान के रेत के गांवों में दो मुसलमान गायक समुदाय रहते हैं: मांगणियार और लांगा। दोनों का गाना एक रिश्ते पर टिका था। हर गायक परिवार के अपने जजमान होते, यानी वे घर जिनके यहां वह परिवार पीढ़ियों से गाता आया। देखिए, यह रिश्ता किस-किस से जुड़ता है।

हर जजमानी में यही लेन-देन

गायक से जजमान को →	जन्म, ब्याह और त्योहार पर गीत; जजमान के पुरखों के नाम और किस्से
जजमान से गायक को →	नेग में अनाज, कपड़ा, पैसा या मवेशी

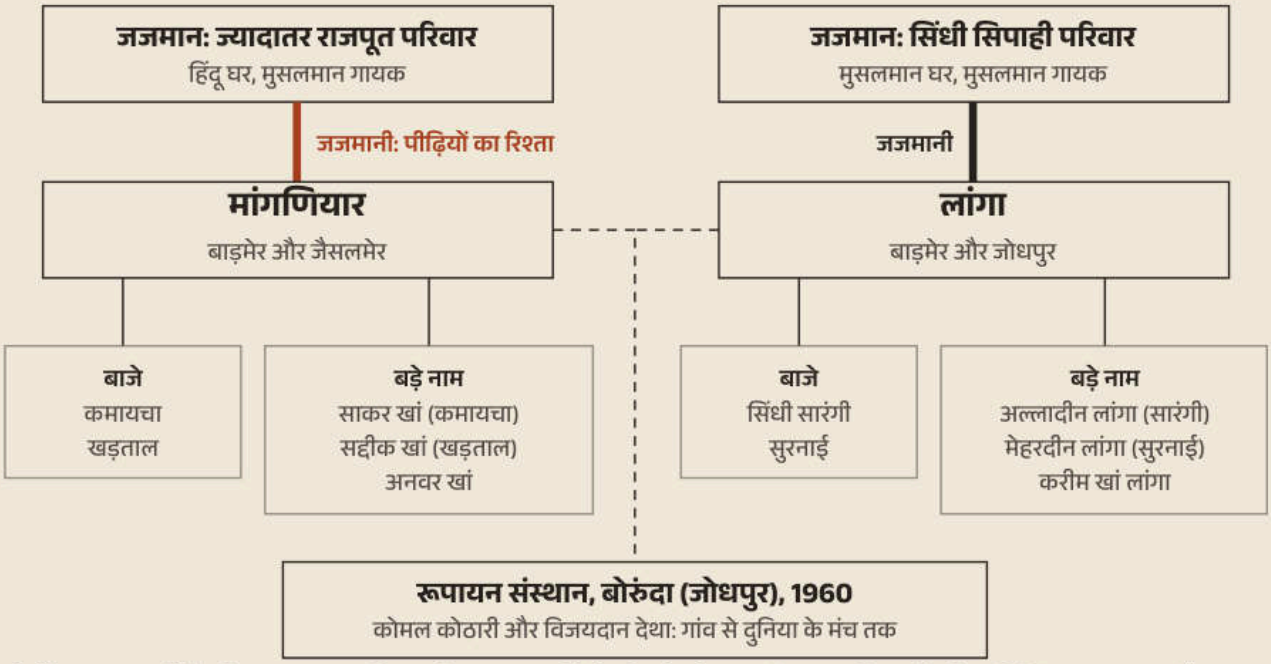

मोटी रेखा जजमानी है, जो एक गायक परिवार को कुछ तय घरों से बांधती थी। लाल रेखा वह रिश्ता है, जो धर्म की हद पार करता है: मुसलमान मांगणियार, हिंदू जजमान। टूटी रेखा बाद का रास्ता है, जो गांव से बड़े मंच तक गया।

धर्म की हद के पार

मांगणियार मुसलमान हैं, और उनके ज्यादातर जजमान हिंदू राजपूत घर रहे। जजमान के यहां ब्याह हो तो मांगणियार ब्याह के गीत गाते, होली-दीवाली पर त्योहार के गीत, और देवी-देवताओं के भजन भी। लांगा का रिश्ता मुसलमान सिंधी सिपाही घरों से रहा। साझी विरासत का यह धागा आगे थान और देवरे के पड़ाव में रामसा पीर तक जाएगा। पहले खंड में ठिकानों और जागीरों का जो ढांचा देखा था, यह रिश्ता उसी समाज के भीतर पलता था: जजमान की हैसियत जितनी, नेग उतना।

SAMPLE · litgram.in

एक रिश्ता, जो पीढ़ियों चला

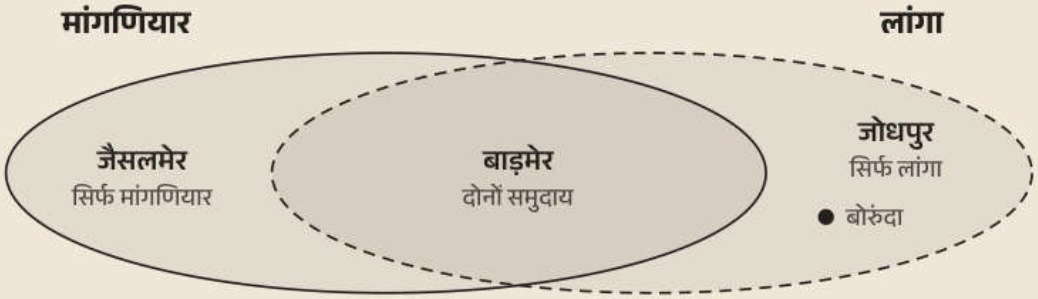

रेखाचित्र, पैमाने पर नहीं · भरी रेखा मांगणियार, टूटी रेखा लांगा

जजमानी कैसे चलती थी

एक गायक परिवार कुछ तय घरों से बंधा रहता। जजमान के घर बच्चा हो, ब्याह हो या कोई बड़ा दिन, गाने वही परिवार आता। बदले में नेग मिलता: अनाज, कपड़ा, पैसा, कभी ऊंट या गाय। पिता के जजमान बेटे के जजमान हो जाते। इसलिए गायक को जजमान के पुरखों के नाम और किस्से याद रहते, और वह उन्हें गीत में गाता।

दो आवाजें

दोनों समुदाय एक ही रेत में गाते हैं, पर उनकी आवाज अलग पहचानी जाती है। मांगणियार का गाना खुला, ऊंचा और गूंजने वाला होता है। लांगा का गाना कोमल और बारीक, शास्त्रीय संगीत के ज्यादा करीब। मांगणियार के हाथ में कमायचा और खड़ताल रहती हैं; लांगा के हाथ में सारंगी और सुरनाई।

गांव से दुनिया तक

1960 में जोधपुर जिले के बोरुंदा गांव में कोमल कोठारी और विजयदान देथा ने रूपायन संस्थान शुरू किया। संस्थान ने गांव-गांव जाकर इन गायकों को खोजा, उनके गीत रिकॉर्ड किए, और उन्हें बड़े मंचों तक पहुंचाया। प्रस्तावना में जोधपुर की दीवार से जो बोरुंदा दिखाया था, वह यही है। इस पड़ाव के आखिरी पन्ने पर रूपायन फिर आएगा, जहां देखेंगे कि लोककला को रिकॉर्ड करके बचाया कैसे गया।

नाम जो दुनिया ने सुने

साकर खां मांगणियार को कमायचा का सबसे बड़ा कलाकार माना गया; 2012 में उन्हें पद्म श्री मिला। सद्दीक खां मांगणियार खड़ताल को हाथ में ऐसे नचाते थे कि उन्हें खड़ताल का जादूगर कहा गया; जयपुर में उनकी याद में लोक रंग नाम की संस्था है। लांगा में अल्लादीन लांगा सारंगी और मेहरदीन लांगा सुरनाई के लिए जाने गए।

रिश्ता आज

राजाओं और ठिकानों के जाने के बाद जजमानों के पास भी पहले जैसा पैसा नहीं रहा। अब कई मांगणियार और लांगा परिवारों की कमाई मेलों, उत्सवों और विदेश के मंचों से होती है। फिर भी गांव में जजमान के घर ब्याह हो, तो कई परिवार आज भी पुराने रिश्ते से गाने पहुंचते हैं। एक ही गायक सुबह गांव के आंगन में और रात को किसी शहर के मंच पर गा सकता है।

आगे → इनके हाथ में जो बाजे हैं, वे खुद एक दुनिया हैं।

खुद देखिए किसी मांगणियार या लांगा कलाकार का गाना सुनिए। गीत में किसी गांव, किसी जजमान या किसी देवता का नाम आए, तो लिख लीजिए। फिर नक्शे पर वह गांव ढूंढिए, और सोचिए कि गायक और जजमान का घर कितनी दूर होगा।

SAMPLE · litgram.in

पड़ाव 6 · थान और देवरे · पांच पीर

पांच पीर

इसी बोली में गांव के थान पर देवता को पुकारा जाता है। राजस्थान के गांवों में पांच ऐसे लोकनायक हैं, जिन्हें हिंदू 'देवता' और मुस्लिम 'पीर' मानकर एक साथ पूजते हैं: रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, हड़बूजी और मांगलिया मेहाजी।

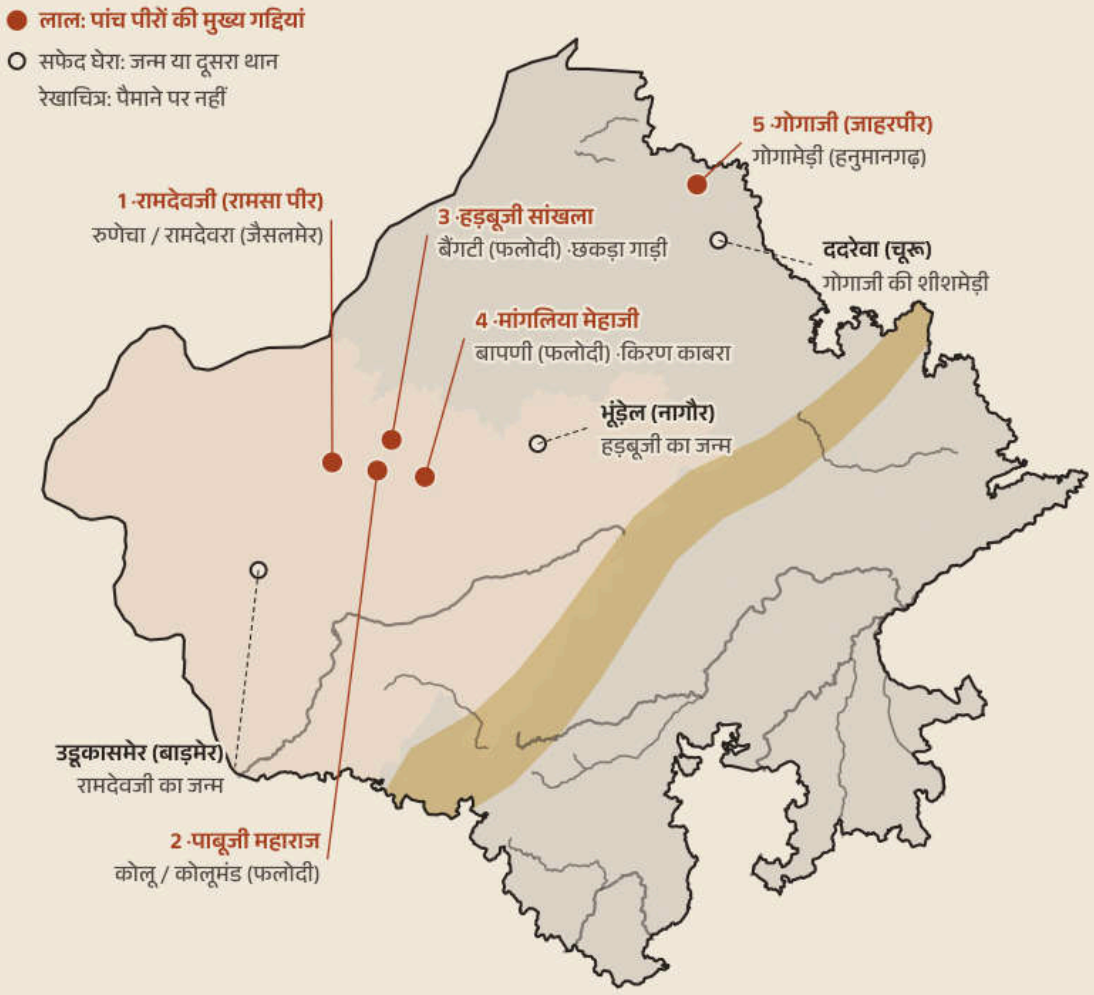

नक्शा एक साफ बात दिखाता है: पांच में से चार पीर मारवाड़ के रेत और फलोदी-पोकरण की पट्टी में बसते हैं, जबकि गोगाजी उत्तर में चूरू और हनुमानगढ़ की सीमा पर।

तेजाजी और देवनारायण: बाहर क्यों?

अक्सर लोग तेजाजी या देवनारायण जी को भी पांच पीरों में गिन लेते हैं। यह गलत है। दोनों गांव-गांव में पूजे जाते हैं और किसानों व पशुपालकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं, पर 'पंचपीर' की पारंपरिक कतार में सिर्फ ऊपर दिए पांच नाम ही आते हैं।

SAMPLE · litgram.in

एक तरफ हिंदू देवता, दूसरी तरफ पीर

कहावत की कतार: सिर्फ ये पांच पीर हैं, हर बड़ा लोकदेवता नहीं

"पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेहा। पांचूं पीर पधारज्यौ, गोगाजी जेहा।।" (पारंपरिक दोहा)

1 रामदेवजी	2 पाबूजी	3 गोगाजी	4 हड़बूजी	5 मेहाजी
तंवर राजपूत	राठौड़, कोलू	चौहान, ददरेवा	सांखला, भूंड़ेल	मांगलिया, तापू
रुणेचा (जैसलमेर)	कोलू (फलोदी)	गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)	बैंगटी (फलोदी)	बापणी (फलोदी)
कामड़िया पंथ	ऊंटों के देवता	जाहरपीर, सांप	छकड़ा गाड़ी	किरण काबरा

पंचपीर में शामिल नहीं (पर उतने ही बड़े लोकदेवता):

तेजाजी (किसानों व सांप के देवता, 06-06) और देवनारायण जी (गुर्जरों के आराध्य व विष्णु अवतार, 06-07)

देवता और पीर साथ कैसे बने?

परंपरा कहती है कि ये पांचों मध्यकाल के वे वीर थे, जिन्होंने गायों, ऊंटों, बीमारों और गरीबों के लिए जान की बाजी लगाई। इनकी साख ऐसी बनी कि हिंदू इन्हें देवता या अवतार मानने लगे और मुस्लिम समुदाय इन्हें करामती 'पीर' कहकर सिर झुकाने लगा।

स्रोत कहते हैं कि कई थानों पर दोनों धर्मों की निशानियां साथ मिलती हैं, जैसे गोगामेड़ी का मकबरेनुमा रूप (06-04) और रामदेवरा की साझी भीड़ (06-02)।

रेत की पट्टी में चार गद्दियां

रुणेचा (रामदेवरा), कोलू, बैंगटी और बापणी आपस में सौ किलोमीटर से भी कम दूरी पर हैं। थार के इस सूखे इलाके में लोगों का जीवन गाय, ऊंट, चारागाह और पानी के लिए जूझता था। इसलिए गांव-गांव में इसी धरती की रक्षा करने वाले ये चार वीर लोकनायक सबसे ज्यादा पूजे गए।

हड़बूजी सांखला और छकड़ा गाड़ी

हड़बूजी नागौर के भूंड़ेल में सांखला राजपूत कुल में जन्मे और रामदेवजी के मौसेरे भाई थे। गुरु बालिनाथ जी से दीक्षा पाकर वे शकुन शास्त्र के जानकार कहलाए; इनका वाहन सियार है। फलोदी के बैंगटी मंदिर में मूर्ति की जगह उनकी लकड़ी की छकड़ा गाड़ी की पूजा होती है, जिससे वे बूढ़ी व पंगु गायों के लिए घास लाते थे (06-05)।

मांगलिया मेहाजी और किरण काबरा

जोधपुर के तापू में पंवार वंश में जन्मे मेहाजी ननिहाल में पलने से मांगलिया कहलाए। फलोदी के बापणी में उनका थान है और प्रिय घोड़ा 'किरण काबरा' था। जैसलमेर के राव राणंगदेव (दूदा) भाटी से गायें बचाते हुए वे मारे गए; जन्माष्टमी को मेला भरता है और परंपरा कहती है कि उनके भोपों का वंश गोद लिए पुत्र से चलता है।

नक्शे से मेले की ओर

पांचों पीरों की अपनी गद्दियां और अपने गीत हैं, पर इनमें सबसे बड़ा और हर धर्म-जाति के लोगों को एक साथ जोड़ने वाला मेला जैसलमेर के रुणेचा (रामदेवरा) में भरता है।

आगे → पांचों में सबसे बड़ा मेला रामदेवरा में भरता है।

खुद देखिए अगली बार किसी मेले या किताब में 'पंचपीर' नाम सुनें, तो दोहा दोहराकर उंगलियों पर पांचों नाम गिनिए: रामदेव, पाबू, गोगा, हड़बू और मेहाजी। अगर कोई छठा नाम जोड़े, तो समझ जाइए कि गिनती फिसल रही है।

SAMPLE · litgram.in

यह तो बस शुरुआत थी

आपने 134 में से पांच विषय देखे। बाकी किताब इसी तरह चलती है: हर विषय एक चित्र से शुरू होता है, और शब्द उस चित्र को समझाते हैं।

पूरे खंड 2 में

- 8 पड़ाव, 134 दोहरे पन्ने, हर पन्ना रंगीन
- सैकड़ों नक्शे, समय-रेखाएं, रेखाचित्र और वंश-वृक्ष, सब एक ही आधार-नक्शे पर
- तारीखें, नाम और जगहें छपे हुए इतिहास-स्रोतों से मिलाकर, सीधी बोलचाल की हिंदी में
- राजस्थान का इतिहास और संस्कृति पढ़ रहे विद्यार्थियों के लिए, और हर उस पाठक के लिए जो इसे समझना चाहता है

नमूने में नहीं, पर किताब में

चित्तौड़ के सात दरवाजे, रणकपुर के 1,444 खंभे, हवा महल, बणी-ठणी, ब्लू पॉटरी और मीनाकारी, बंधेज और लहरिया, घूमर और तेरहताली, कठपुतली, डिंगल और पिंगल, पाबूजी की फड़, बिश्नोई के 29 नियम, मीरा, गणगौर और तीज, पगड़ी और गहने, और पुष्कर का मेला।

साथ का खंड

खंड 1 · इतिहास

कालीबंगा और आहड़ से चौहान, मेवाड़, मुगल, मराठे, 1857, किसान आंदोलन, प्रजामंडल और 1 नवंबर 1956 तक: 135 दोहरे पन्नों में, समय के क्रम में, एक कहानी की तरह।

पूरी किताब यहां से लीजिए

litgram.in

दोनों खंडों की कीमत, ऑर्डर का तरीका और नई जानकारी इसी वेबसाइट पर मिलेगी। यह नमूना अपने दोस्तों के साथ खुलकर बांटिए।

मुकेश के. शर्मा · शिवाली शर्मा

राजस्थान की कला और संस्कृति, एक यात्रा की तरह: गढ़ से मेले तक।

हर विषय दो आमने-सामने के पन्नों पर है: एक बड़ा खाका, नक्शा, जाल या सचित्र विवरण, और साथ में सीधी, जीवंत बोलचाल की हिंदी। पाठक पहले देखता है, फिर समझता है।

यात्रा मेहरानगढ़ की प्राचीर से शुरू होती है, जहां से पूरा राजस्थान एक नजर में दिखता है। फिर कहानी किलों के पत्थरों से उतरकर दरबार के चित्रों में आती है, बाजार के कारीगरों और चौपाल के गायकों-नर्तकों तक पहुंचती है, बोलियों और लोकदेवताओं के देवरों से होकर संतों की वाणी और अंत में पुष्कर के मेले में रम जाती है।

जहां परंपरा और दस्तावेज अलग बात कहते हैं, किताब दोनों को ईमानदारी से रखती है: **स्रोत कहते हैं** और परंपरा कहती है। हर पन्ने के आखिर में **खुद देखिए** है: अपनी जमीन पर संस्कृति को खुद परखने का रास्ता।

कला और संस्कृति के हर खोजी, विद्यार्थी और जिज्ञासु पाठक के लिए।

इस खंड के 8 पड़ाव

- **प्रस्तावना**
  मेहरानगढ़ की प्राचीर से
- **पड़ाव 1 · पत्थर में लिखा**
  किले, महल, मंदिर, बावड़ियां
- **पड़ाव 2 · दरबार के रंग**
  चित्रकला की शैलियां व उस्ता कला
- **पड़ाव 3 · बाजार और कारीगर**
  हस्तशिल्प, छपाई और मीनाकारी
- **पड़ाव 4 · चौपाल पर**
  लोकनृत्य, लोकनाट्य और वाद्ययंत्र
- **पड़ाव 5 · बोली-बानी**
  भाषा, बोलियां और साहित्य
- **पड़ाव 6 · थान और देवरे**
  लोकदेवता, लोकदेवियां और पंचपीर
- **पड़ाव 7 · संतों की राह**
  भक्ति आंदोलन, पंथ और दरगाह
- **पड़ाव 8 · मेला, त्योहार, पहनावा**
  रीति-रिवाज, आभूषण और वेशभूषा
- **उपसंहार**
  पुष्कर का मेला

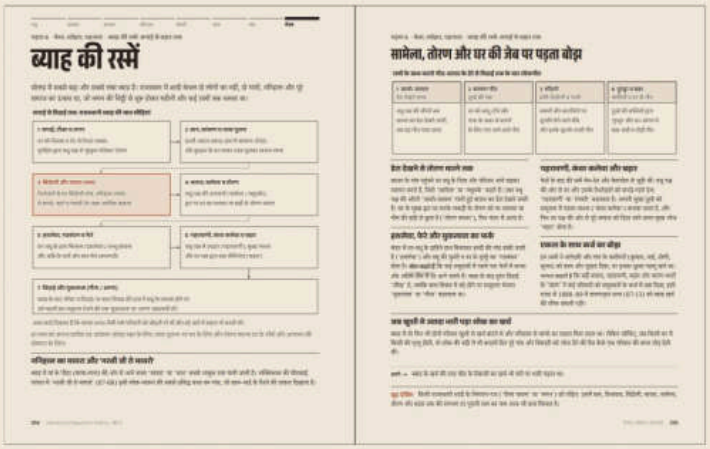

भीतर का एक दोहरा पन्ना: पड़ाव 8, ब्याह की रस्में

मुकेश के. शर्मा · शिवाली शर्मा